

अनेकांत एज्युकेशन सोसायटी,
तुळजाराम चतुरचंद महाविद्यालय, बारामती
(कला, विज्ञान व वाणिज्य)

(स्वायत्त)

एम. ए. (भाग-1) हिंदी [M.A. - I]

सेमिस्टर	पेपर कोड नं.	पेपर का नाम	क्रेडिट
I	HIN 4101	प्रश्नपत्र-1 विशेष स्तर : प्राचीन तथा मध्ययुगीन काव्य (अमीर खुसरो तथा जायसी)	04
II	HIN 4201	प्रश्नपत्र-5 विशेष स्तर : मध्ययुगीन हिंदी काव्य (सूरदास, बिहारी और भूषण)	04

प्रथम सत्र

प्रश्नपत्र 1 : सामान्य स्तर

प्राचीन और मध्ययुगीन काव्य

(अमीर खुसरो तथा जायसी)

(इस प्रश्नपत्र के लिए कुल श्रेयांक/कर्मांक/क्रेडिट= 04)

उद्देश्य :

1. हिंदी साहित्य की आदिकालीन तथा भक्तिकालीन काव्य प्रवृत्तियों की जानकारी देना ।
2. छात्रों को प्राचीन तथा मध्ययुगीन काव्य-कृतियों का परिचय कराना ।
3. प्राचीन तथा मध्ययुगीन कवियों की काव्य कला से छात्रों को अवगत कराना ।
4. छात्रों को हिंदी की प्राचीन तथा मध्ययुगीन काव्य परंपरा से परिचित कराना ।
5. छात्रों को प्राचीन तथा मध्ययुगीन हिंदी भाषा से अवगत कराना ।
6. छात्रों में प्राचीन तथा मध्ययुगीन काव्य अध्ययन के माध्यम से समीक्षात्मक दृष्टि विकसित कराना ।

अध्यापन पद्धति :

1. व्याख्यान तथा विश्लेषण ।
2. संगोष्ठी, स्वाध्याय तथा गुटचर्चा ।
3. दृक्-श्राव्य माध्यमों / साधनों का प्रयोग ।
4. पी. पी. टी. / भाषा प्रयोगशाला का प्रयोग ।
5. अतिथि विशेषज्ञों के व्याख्यान ।
6. अध्ययन यात्रा का आयोजन करना ।

अ) अमीर खुसरो – श्रेयांक/कर्मांक = 02

आ) जायसी – श्रेयांक/कर्मांक = 02

(प्रत्येक प्रश्नपत्र के श्रेयांक/कर्मांक/क्रेडिट = 04)

पाठ्यपुस्तकें :

1) अमीर खुसरो और उनका हिंदी साहित्य

संपादक : डॉ. भोलानाथ तिवारी

प्रकाशक : प्रभात प्रकाशन, आसफ अली रोड,

नई दिल्ली - 110 002

ससंदर्भ व्याख्या के लिए रचनाएँ :

अ) पहेलियाँ

1. अंतर्लिपिका - 1, 4, 12, 15, 17, = 05

2. बहिर्लिपिका - 13, 18, 20, 21, 23 = 05

आ) मुकरियाँ - 7, 9, 11, 15, 19, = 05

इ) गीत - 2, 5, 7 = 03

(तासिकाएँ 15 घंटे =
श्रेयांक/कर्मांक/क्रेडिट
- 01)

2) पद्मावत : मलिक मुहम्मद जायसी

संपादक : वासुदेवशरण अग्रवाल

प्रकाशक : साहित्य सदन, चिरगाँव झाँसी

ससंदर्भ व्याख्या के लिए खंड :

1) नागमति वियोग खंड

(तासिकाएँ 15 घंटे =
श्रेयांक/कर्मांक/क्रेडिट- 01)

अध्ययनार्थ विषय :

1. अमीर खुसरो-व्यक्तित्व एवं कृतित्व

2. अमीर खुसरो के गीतों में संवेदनशीलता

3. अमीर खुसरो की पहेलियों में लोकरंजकता

4. अमीर खुसरो का खड़ीबोली हिंदी के विकास
में योगदान

5. अमीर खुसरो की भाषा तथा काव्य कला

6. अमीर खुसरो के काव्य की देन

(तासिकाएँ 15 घंटे =
श्रेयांक/कर्मांक/क्रेडिट-
01)

7. जायसी व्यक्तित्व एवं कृतित्व
8. पद्मावत में प्रेम भाव
9. पद्मावत में सौंदर्य वर्णन
10. पद्मावत में विरह वर्णन
11. पद्मावत में प्रकृति चित्रण
12. पद्मावत में चरित्र-चित्रण
13. पद्मावत की महाकाव्यात्मकता

(तासिकाएँ 15 घंटे =
श्रेयांक / कर्मांक / क्रेडिट— 01)

संदर्भ ग्रंथ :

1. अमीर खुसरो — डॉ. हरदेव बाहरी
2. खुसरो की हिंदी कविता— ब्रजरत्न दास
3. जायसी के पद्मावत का मूल्यांकन — प्रो. हरेंद्रप्रताप सिन्हा
4. महाकवि जायसी और उनका काव्य — डॉ. इकबाल अहमद
5. मलिक मुहम्मद जायसी और उनका काव्य — डॉ. शिवसहाय पाठक
6. जायसी पद्मावत काव्य और दर्शन — डॉ. गोविंद त्रिगुणायत
7. पद्मावत में काव्य, संस्कृति और दर्शन — डॉ. द्वारिकाप्रसाद सक्सेना
8. पद्मावत का काव्य सौंदर्य — डॉ. चंद्रबली पाण्डेय
9. हिंदी के प्रतिनिधि कवि — डॉ. सुरेश अग्रवाल

अनेकांत एज्युकेशन सोसायटी,
तुळजाराम चतुरचंद महाविद्यालय, बारामती
(कला, विज्ञान व वाणिज्य)

(स्वायत्त)

एम. ए. (भाग-1) हिंदी [M.A. - I]

सेमिस्टर	पेपर कोड नं.	पेपर का नाम	क्रेडिट
I	HIN 4102	प्रश्नपत्र-2 विशेष स्तर : आधुनिक हिंदी कथा साहित्य (उपन्यास और कहानी)	04
II	HIN 4202	प्रश्नपत्र-6 विशेष स्तर : हिंदी नाटक विधा	04

अनेकांत एज्युकेशन सोसायटी,
तुळजाराम चतुरचंद महाविद्यालय, बारामती
(कला, विज्ञान व वाणिज्य)

(स्वायत्त)

एम. ए. (भाग-1) हिंदी [M.A. - I]

सेमिस्टर	पेपर कोड नं.	पेपर का नाम	क्रेडिट
I	HIN 4102	प्रश्नपत्र-2 विशेष स्तर : आधुनिक हिंदी कथा साहित्य (उपन्यास और कहानी)	04
II	HIN 4202	हिंदी नाटक विधा	04

प्रश्नपत्र 2 : विशेष स्तर
आधुनिक हिंदी कथा साहित्य
(उपन्यास और कहानी)

(इस प्रश्नपत्र के लिए कुल श्रेयांक/कर्मांक/क्रेडिट= 04)

उद्देश्य :

1. गद्य की प्रमुख विधाओं के तात्त्विक स्वरूप का परिचय देना।
2. प्रमुख गद्य विधाओं के विकासक्रम की जानकारी देना।
3. विधा विशेष के तात्त्विक स्वरूप एवं ऐतिहासिक विकास के परिप्रेक्ष्य में रचना विशेष का महत्व समझने एवं मूल्यांकन करने की क्षमता बढ़ाना।
4. रचना के आस्वादन एवं समीक्षण की क्षमता विकसित करना।

अध्यापन पद्धति :

1. व्याख्यान तथा विश्लेषण ।
2. संगोष्ठी, स्वाध्याय तथा गुटचर्चा ।
3. दृक्-श्राव्य माध्यमों / साधनों का प्रयोग ।
4. अतिथि विद्वानों के व्याख्यान ।

पाठ्यपुस्तकें :

- 1) उपन्यास – 'छप्पर' : डॉ. जयप्रकाश कर्दम

प्रकाशक : राधाकृष्ण प्रकाशन, जी-17, जगत पुरी, दिल्ली – 92

- 2) हिंदी की श्रेष्ठ कहानियाँ

संपादक – डॉ. सुरेश बाबर, डॉ. विठ्ठलसिंह ढाकरे

प्रकाशक : अरुणोदय प्रकाशन, 21-ए अंसारी रोड़, दरियागंज, नई दिल्ली- 02

(प्रत्येक प्रश्नपत्र के श्रेयांक/कर्मांक/क्रेडिट = 04)

अध्ययनार्थ विषय :

1. हिंदी उपन्यास विधा का विकास
2. दलित उपन्यास का सामान्य परिचय
3. विवेच्य रचनाकार का व्यक्तित्व एवं कृतित्व
4. 'छप्पर' : तात्त्विक विवेचन
5. 'छप्पर' : संवेदनाएँ
6. 'छप्पर' : विभिन्न समस्याएँ
7. 'छप्पर' : पात्रों का चरित्रचित्रण
8. 'छप्पर' : शिल्प पक्ष
9. 'छप्पर' : शीर्षक की सार्थकता

(तासिकाएँ 15 घंटे =
श्रेयांक/कर्मांक/क्रेडिट— 01)

(तासिकाएँ 15 घंटे =
श्रेयांक/कर्मांक/क्रेडिट— 01)

अध्ययनार्थ विषय :

1. हिंदी कहानी विधा का विकास
2. कहानी विधा के तत्व तथा आलोचना :
हिंदी की श्रेष्ठ कहानियों के संदर्भ में
हिंदी की श्रेष्ठ कहानियाँ
1. 'पुरस्कार' — जयशंकर प्रसाद
2. 'उसकी माँ'— पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र'
3. 'हंसा जाई अकेला' — मार्कण्डेय
4. 'वह क्या था ?' — हरिशंकर परसाई
5. 'सजा' — मन्नू भंडारी
6. 'वह मैं ही थी' — मृदला गर्ग
7. 'लिटरेचर' — संजीव
8. 'मुंबई कांड' — ओमप्रकाश वाल्मीकि

(तासिकाएँ 15 घंटे =
श्रेयांक/कर्मांक/क्रेडिट— 01)

(तासिकाएँ 15 घंटे =
श्रेयांक/कर्मांक/क्रेडिट— 01)

संदर्भ ग्रंथ :

1. अट्ठारह उपन्यास : राजेंद्र यादव
 2. हिंदी उपन्यास : सौ वर्ष — संपा. रामदरश मिश्र
 3. समकालीन हिंदी उपन्यास — डॉ. विवेकी राय
 4. उपन्यास : स्थिति और गति — डॉ. चंद्रेकांत बांदिवडेकर
 5. आज का हिंदी उपन्यास — डॉ. इंद्रनाथ मदान
 6. प्रेमचंदोत्तर हिंदी उपन्यासों की शिल्पविधि : डॉ. सत्यपाल चुघ
 7. नई कहानी का स्वरूप विवेचन — डॉ. इंदु रश्मि
 8. नई कहानी के विविध प्रयोग — शशिभूषण पाण्डेय शीतांशु
 9. समकालीन हिंदी कहानी — डॉ. पुष्पपाल सिंह
 10. नई कहानी की भूमिका — कमलेश्वर
 11. नई कहानी : संदर्भ और प्रकृति — देवीशंकर अवस्थी
 12. भीष्म साहनी के साहित्य का अनुशीलन— डॉ. सुरेश बाबर
 13. उत्तरशती का हिंदी साहित्य— संपा. डॉ. सुरेशकुमार जैन
 14. आधुनिक परिप्रेक्ष्य में हिंदी साहित्य — डॉ. राजेंद्र खैरनार
 15. हिमांशु जोशी का कथा साहित्य — डॉ. अनिल साळुंखे
-

अनेकांत एज्युकेशन सोसायटी,
तुळजाराम चतुरचंद महाविद्यालय, बारामती
(कला, विज्ञान व वाणिज्य)

(स्वायत्त)

एम. ए. (भाग-1) हिंदी [M.A. - I]

सेमिस्टर	पेपर कोड नं.	पेपर का नाम	क्रेडिट
I	HIN 4103	प्रश्नपत्र-3 भारतीय साहित्यशास्त्र	04
II	HIN 4203	प्रश्नपत्र-7 पाश्चात्य साहित्यशास्त्र	04

प्रश्नपत्र 3 : विशेष स्तर

भारतीय साहित्यशास्त्र

(इस प्रश्नपत्र के लिए कुल श्रेयांक/कमांक/क्रेडिट= 04)

उद्देश्य :

1. छात्रों को भारतीय साहित्यशास्त्र का परिचय देना।
2. छात्रों को भारतीय साहित्यशास्त्र के विकासक्रम से परिचित कराना।
3. छात्रों को भारतीय साहित्यशास्त्र के सिद्धांतों का ज्ञान कराना।
4. साहित्य और साहित्यशास्त्र के सहसंबंधों से छात्रों को अवगत कराना।
5. छात्रों को साहित्यशास्त्रीय चिंतन से परिचित कराना।
6. छात्रों को भारतीय साहित्यशास्त्र के सिद्धांतों में साम्य-वैषम्य एवं उसके कारणों का ज्ञान कराना।
7. छात्रों को साहित्यशास्त्रीय समीक्षा का महत्व अवगत कराना।
8. साहित्यशास्त्रीय अध्ययन के माध्यम से छात्रों में समीक्षात्मक दृष्टि विकसित करना।

अध्यापन पद्धति :

1. व्याख्यान तथा विश्लेषण ।
2. संगोष्ठी, स्वाध्याय तथा गुटचर्चा ।
3. दृक्-श्राव्य माध्यमों / साधनों का प्रयोग ।
4. पी. पी. टी./भाषा प्रयोगशाला का प्रयोग।
5. अतिथि विशेषज्ञों के व्याख्यान ।

अध्ययनार्थ विषय :

1. रस सिद्धांत :

रस का स्वरूप, भरतमुनि का रससूत्र, रस के अवयव (अंग), रस निष्पत्ति संबंधी भट्टलोल्लट, शंकुक, भट्टनायक तथा अभिनव गुप्त द्वारा की गई व्याख्याओं का विवेचन, साधारणीकरण की अवधारणा, करुण रस का आस्वाद।

(तासिकाएँ 15 घंटे =
श्रेयांक/कर्मांक/
क्रेडिट- 01)

2. अलंकार सिद्धांत :

अलंकार शब्द की व्युत्पत्ति, परिभाषा, अलंकार सिद्धांत का स्वरूप, अलंकार और अलंकार्य, अलंकार और रस, काव्य में अलंकार का स्थान।

(तासिकाएँ 09 घंटे =
श्रेयांक/कर्मांक/
क्रेडिट -)

3. रीति सिद्धांत :

रीति शब्द की व्युत्पत्ति, रीति की परिभाषा, रीति संप्रदाय, रीति भेद, रीति और गुण, रीति और शैली।

(तासिकाएँ 06 = 15 घंटे
श्रेयांक/कर्मांक/
क्रेडिट - 01)

4. ध्वनि सिद्धांत :

ध्वनि शब्द की व्युत्पत्ति, ध्वनि की परिभाषा, ध्वनि का स्वरूप, ध्वनि और स्फोट सिद्धांत, ध्वनि और शब्द-शक्ति, ध्वनि सिद्धांत का महत्व।

(तासिकाएँ 15 घंटे =
श्रेयांक/कर्मांक/
क्रेडिट - 01)

5. वक्रोक्ति सिद्धांत :

वक्रोक्ति की परिभाषा, आचार्य कुंतक पूर्व वक्रोक्ति विचार, वक्रोक्ति सिद्धांत का स्वरूप, वक्रोक्ति के भेदों का सोदाहरण परिचय, वक्रोक्ति का महत्व।

(तासिकाएँ 08 घंटे
श्रेयांक/कर्मांक/
क्रेडिट -) +

6. औचित्य सिद्धांत :

औचित्य का स्वरूप, आचार्य क्षेमेन्द्र पूर्व औचित्य विचार,
आचार्य क्षेमेन्द्र का औचित्य विचार, औचित्य के भेद,
अन्य सिद्धांतों के संदर्भ में औचित्य का महत्व।

(तासिकाएँ 07 = 15 घंटे
श्रेयांक / कर्मांक / क्रेडिट—
01)

संदर्भ ग्रंथ:

1. काव्यशास्त्र की रूपरेखा— डॉ. रामदास भारद्वाज
2. भारतीय काव्यशास्त्र के सिद्धांत— डॉ. कृष्णदेव शर्मा
3. काव्यशास्त्र — डॉ. भगीरथ मिश्र
4. भारतीय काव्यशास्त्र —डॉ. विजयपाल सिंह
5. भारतीय काव्यशास्त्र एवं पाश्चात्य साहित्य—चिंतन— डॉ. सभापति मिश्र
6. भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र का तुलनात्मक अध्ययन— डॉ. बच्चन सिंह
7. भारतीय तथा पाश्चात्य काव्यशास्त्र— डॉ. सुरेशकुमार जैन. प्रा. महावीर कंडारकर
8. साहित्यशास्त्र के प्रमुख सिद्धांत— डॉ. राममूर्ति त्रिपाठी
9. रीतिकाव्य की भूमिका— डॉ. नगेंद्र
10. भारतीय काव्यशास्त्र—(खंड—1 और 2)— आचार्य बलदेव उपाध्याय
11. भारतीय काव्यशास्त्र के सिद्धांत— डॉ. गणपतिचंद्र गुप्त
12. भारतीय काव्यशास्त्र के सिद्धांत— डॉ. तेजपाल चौधरी
13. भारतीय तथा पाश्चात्य काव्यशास्त्र— प्रो. हरिमोहन
14. भारतीय काव्यशास्त्र के सिद्धांत— डॉ. गोविंद त्रिगुणायत
15. भारतीय काव्यशास्त्र के सिद्धांत— डॉ. जालिंदर इंगळे
16. भारतीय काव्यशास्त्र के सिद्धांत— डॉ. कृष्णदेव झारी

अनेकांत एज्युकेशन सोसायटी,
तुळजाराम चतुरचंद महाविद्यालय, बारामती
(कला, विज्ञान व वाणिज्य)

(स्वायत्त)

एम. ए. (भाग-1) हिंदी [M.A. - I]

सेमिस्टर	पेपर कोड नं.	पेपर का नाम	क्रेडिट
I	HIN 4104	प्रश्नपत्र-4 विशेष स्तर : विशेष साहित्यकार : कबीर	04
II	HIN 4204	प्रश्नपत्र-8 विशेष स्तर : विशेष विधा : हिंदी उपन्यास	04

प्रथम सत्र

प्रश्नपत्र 4 : विशेष स्तर :

विशेष साहित्यकार : कबीर

(इस प्रश्नपत्र के लिए कुल श्रेयांक/कर्मांक/क्रेडिट= 04)

उद्देश्य :

1. छात्रों को तत्कालीन परिस्थितियों (दार्शनिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक) के परिप्रेक्ष्य में कबीर के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय देते हुए हिंदी को उनके प्रदेश की जानकारी देना।
2. छात्रों को कबीर की काव्यगत शक्ति और सीमाओं से परिचित कराना।
3. छात्रों को कबीर के काव्य की प्रासंगिकता से अवगत कराना।

अध्यापन पद्धति :

1. व्याख्यान तथा विश्लेषण।
2. संगोष्ठी, स्वाध्याय तथा गुटचर्चा।
3. दृक्-श्राव्य माध्यमों / साधनों का प्रयोग।
4. दोहों और पदों की प्रस्तुति।
5. अतिथि विद्वानों के व्याख्यान।

पाठ्यग्रंथ :

कबीर ग्रंथावली — संपादक : श्यामसुंदर दास

प्रकाशक : नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी

ससंदर्भ व्याख्या के लिए केवल निम्नलिखित छंद :

- | | | |
|--|---|---|
| 1. गुरुदेव कौ अंग : 3, 14, 15, 21, 33 = 05 | } | (तासिकाएँ 15 घंटे =
श्रेयांक/कर्मांक/क्रेडिट 01) |
| 2. विरह कौ अंग : 5, 6, 11, 14, 22 = 05 | | |
| 3. परचा कौ अंग : 17, 21, 35, 39, 45 = 05 | | |

4. काल कौ अंग : 1, 13, 14, 15, 20 = 05
 5. पद : 1, 11, 55, 92, 111, 117, 180, 331,
 338, 402 = 10

(तासिकाएँ 15 घंटे =
 श्रेयांक / कर्मांक / क्रेडिट 01)

अध्ययनार्थ विषय :

1. निर्गुण काव्यधारा के प्रमुख कवि : संत कबीर
2. कबीर : व्यक्तित्व एवं कृतित्व
3. कबीर के धार्मिक विचार
4. कबीर काव्य में विद्रोह
5. समाज सुधारक के रूप में कबीर
6. कबीर का प्रेम तत्व और विरह भावना
7. कबीर का रहस्यवाद
8. कबीर के राम
9. कबीर की दार्शनिकता— ब्रह्म, जीव, माया, जगत, मोक्ष
10. कबीर की उलटबासियों और प्रतीक पद्धति
11. कबीर काव्य की प्रासंगिकता

(तासिकाएँ 15 घंटे =
 श्रेयांक / कर्मांक / क्रेडिट 01)

(तासिकाएँ 15 घंटे =
 श्रेयांक / कर्मांक /
 क्रेडिट 01)

संदर्भ ग्रंथ :

1. कबीर : हजारीप्रसाद द्विवेदी
2. कबीर: संपा. विजयेंद्र स्नातक
3. कबीर की विचारधारा : डॉ. गोविंद त्रिगुणायत
4. कबीर साहित्य की परंपरा : आ. परशुराम चतुर्वेदी
5. कबीर चिंतन और सर्जन : संपा. आनंदप्रकाश दीक्षित
6. कबीर : एक विवेचन : डॉ. सरनामसिंह शर्मा 'अरुण'
7. नाथ और संत साहित्य : डॉ. नागेंद्रनाथ उपाध्याय
8. हिंदी संतों का उलटबाँसी साहित्य : डॉ. रमेशचंद्र मिश्रा
9. कबीर साधना और साहित्य : डॉ. प्रतापसिंह चौहान
10. कबीर एक अनुशीलन : डॉ. रामकुमार वर्मा
11. युग पुरुष कबीर : रामचंद्र वर्मा

द्वितीय सत्र

प्रश्नपत्र 5 : सामान्य स्तर

मध्ययुगीन हिंदी काव्य

(सूरदास, बिहारी तथा भूषण)

(इस प्रश्नपत्र के लिए कुल श्रेयांक/कर्मांक/क्रेडिट= 04)

उद्देश्य :

1. हिंदी के आदिकालीन, भक्तिकालीन तथा रीतिकालीन काव्य प्रवृत्तियों की जानकारी देना।
2. तत्कालीन प्रमुख कवि तथा उनकी कृतियों से परिचय कराना।
3. पाठ्य कृतियों के संदर्भ में समीक्षा की क्षमता बढ़ाना।

अध्यापन पद्धति :

1. व्याख्यान तथा विश्लेषण।
2. संगोष्ठी, स्वाध्याय तथा गुटचर्चा।
3. दृक्-श्राव्य माध्यमों / साधनों का प्रयोग।
4. अध्ययन यात्रा।
5. अतिथि विशेषज्ञों के व्याख्यान।

पाठ्यपुस्तकें :

1) सूरदास : भ्रमरगीत सार

संपादक : आचार्य रामचंद्र शुक्ल

प्रकाशक : श्री. गोपालदास पोरवाल, सहित्य सेवा सदन,
वाराणसी 1

संसंदर्भ व्याख्या के लिए पद : पदक्रम- 21 से 60 = 20

(तासिकाएँ 11 घंटे)

2) बिहारी रत्नाकर : श्री. जगन्नाथ 'रत्नाकर'

प्रकाशक : प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली, सं. - 2006

संसंदर्भ व्याख्या के लिए दोहे : 1, 22, 25, 32, 35, 38,

45, 60, 67, 73, 76, 94, 126, 152, 181, 201, 217, 251, 277,

283, 301, 318, 322, 345, 373, 388, 425, 472, 496, 530,

(तासिकाएँ 11
घंटे)

3) रीतिकाव्य धारा : संपादक : डॉ.रामचंद्र तिवारी /

डॉ.रामफेर त्रिपाठी

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

ससंदर्भ व्याख्या के लिए कवि भूषण के पद : 01 से 10 = 10

(तासिकाएँ

08 घंटे)

(तीनों की कुल तासिकाएँ 11+11+08=30घंटे= श्रेयांक/कर्मांक/क्रेडिट-02)

अध्ययनार्थ कवि :

1) सूरदास

2) बिहारी

3) भूषण

अध्ययनार्थ विषय :

1) सूरदास — व्यक्तित्व एवं कृतित्व

2) भ्रमरगीत का उद्देश्य

3. सूरदास के काव्य में वियोग वर्णन

4. भ्रमरगीत : एक उपालंभ काव्य

5. सूर के भ्रमरगीत की विशेषताएँ

6) भ्रमरगीत में प्रकृति चित्रण

7) भ्रमरगीत की काव्यकला

8) सूर की काव्य कला

9) बिहारी व्यक्तित्व एवं कृतित्व

10) रीतिसिद्ध कवि बिहारी

11) बिहारी का श्रृंगार वर्णन—संयोग और वियोग वर्णन

12) बिहारी का सौंदर्य चित्रण

13) बिहारी की बहुज्ञता

14) बिहारी की भक्तिभावना

15) बिहारी की काव्य कला

16) सतसई परंपरा में बिहारी का स्थान

(तासिकाएँ 10 घंटे)

(तासिकाएँ 10 घंटे)

- 17) भूषण का व्यक्तित्व एवं कृतित्व
- 18) भूषण के काव्य में वीर रस
- 19) भूषण के काव्य में राष्ट्रीय चेतना
- 20) भूषण की काव्य कला
- 21) भूषण के काव्य की भाषा – शैली
- 22) रीति काव्य में भूषण का योगदान

(तासिकाएँ 10 घंटे)

(तीनों की कुल तासिकाएँ 10+10+10=30घंटे= श्रेयांक / कर्मांक / क्रेडिट – 02)

संदर्भ ग्रंथ :

1. सूरदास और उनका साहित्य – डॉ. मुंशीराम शर्मा
2. भारतीय साधना और सूर साहित्य – डॉ. हरवंशलाल शर्मा
3. सूर की काव्य कला – मनमोहन गौतम
4. सूर साहित्य – डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी
5. सूर की भाषा – डॉ. प्रेमनारायण टंडन
6. कृष्णकाव्य और सूर : सांस्कृतिक संदर्भ – डॉ. प्रेमशंकर
7. सूरदास – आ. रामचंद्र शुक्ल
8. सूरदास : एक पुनरावलोकन – डॉ. ओम प्रकाश शर्मा
9. महाकवि सूरदास – आ. नंददुलारे वाजपेजी
10. भ्रमरगीत का काव्य सौंदर्य – डॉ. सत्येंद्र पारिख
11. भ्रमरगीत : एक अन्वेषण – डॉ. सत्येंद्र
12. सूर की गोपिका : एक मनोवैज्ञानिक अध्ययन – डॉ. प्रभारानी भाटिया
13. सूरदास – डॉ. ब्रजेश्वर वर्मा
14. बिहारी का तुलनात्मक अध्ययन – पं. पद्मसिंह शर्मा
15. बिहारी और उनका साहित्य – डॉ. हरवंशलाल शर्मा / डॉ. परमानंद शास्त्री
16. बिहारी काव्य का मूल्यांकन – किशोरी लाल
17. षट्कवि : विवेचनात्मक अध्ययन – डॉ. ओमप्रकाश शर्मा
18. सूर की मौलिकता – डॉ. वेदप्रकाश शास्त्री
19. हिंदी के प्राचीन कवि – डॉ. दयानंद शर्मा

प्रश्नपत्र 6 : विशेष स्तर

हिंदी नाटक विधा

(इस प्रश्नपत्र के लिए कुल श्रेयांक/कर्मांक/क्रेडिट= 04)

उद्देश्य :

1. गद्य की प्रमुख विधाओं के तात्त्विक स्वरूप का परिचय देना।
2. प्रमुख गद्य विधाओं के विकास क्रम की जानकारी देना।
3. विधा विशेष के तात्त्विक स्वरूप एवं ऐतिहासिक विकास के परिप्रेक्ष्य में रचना विशेष का महत्व समझने एवं मूल्यांकन करने की क्षमता बढ़ाना।
4. रचना के आस्वादन एवं समीक्षण की क्षमता विकसित करना।

अध्यापन पद्धति :

1. व्याख्यान तथा विश्लेषण।
2. संगोष्ठी, स्वाध्याय तथा गुटचर्चा।
3. दृक्-श्राव्य माध्यमों/साधनों का प्रयोग।
4. अतिथि विद्वानों के व्याख्यान।

पाठ्य पुस्तकें :

1. नाटक : 'अभंग गाथा' — नरेंद्र मोहन
प्रकाशक : जगताराम एण्ड सन्स्, 24 / 4855
अन्सारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली - 110002
(तासिकाएँ 15 घंटे =
श्रेयांक/कर्मांक/क्रेडिट 01)
2. 'आषाढ़ का एक दिन'— मोहन राकेश
प्रकाशक : राजपाल एण्ड सन्ज,
कश्मीरी गेट प्रकाशन, दिल्ली - 110006
(तासिकाएँ 15 घंटे =
श्रेयांक/कर्मांक/क्रेडिट 01)

अध्ययनार्थ विषय :

1. हिंदी नाटक विधा का विकास ।
 2. नाटक : परिभाषा, स्वरूप तथा तत्व ।
 3. नरेंद्र मोहन : व्यक्तित्व एवं कृतित्व ।
 4. तत्वों के आधार पर 'अभंग गाथा' नाटक की समीक्षा ।
 5. 'अभंग गाथा' : चित्रित समस्याएँ ।
 6. 'अभंग गाथा' : शिल्पगत विशेषताएँ ।
 7. 'अभंग गाथा' नाटक की प्रासंगिकता ।
 8. 'अभंग गाथा' नाटक के आधार पर संत तुकाराम के विचार ।
 9. मोहन राकेश : व्यक्तित्व एवं कृतित्व ।
 10. तत्वों के आधार पर 'आषाढ़ का एक दिन' नाटक की समीक्षा ।
 11. 'आषाढ़ का एक दिन' : चित्रित समस्याएँ ।
 12. 'आषाढ़ का एक दिन' : शिल्पगत विशेषताएँ ।
 13. 'आषाढ़ का एक दिन' : शीर्षक की सार्थकता ।
 14. 'आषाढ़ का एक दिन' नाटक की प्रासंगिकता ।
- (तासिकाएँ 15 घंटे =
श्रेयांक / कर्मांक / क्रेडिट 01)
- (तासिकाएँ 15 घंटे =
श्रेयांक / कर्मांक /
क्रेडिट 01)

संदर्भ ग्रंथ :

1. हिंदी रंगकर्म : दशा और दिशा — डॉ. जयदेव जनेजा
2. समकालीन हिंदी नाटक और रंगमंच — डॉ. जयदेव तनेजा
3. समसामयिक हिंदी नाटकों में खंडित व्यक्तित्व अंकन — डॉ. टी. आर. पाटील
4. आधुनिक हिंदी नाटकों में प्रयोगधर्मिता — डॉ. सत्यवती त्रिपाठी
5. हिंदी नाटक : आज—कल — डॉ. जयदेव तनेजा
6. सातवें दशक के प्रतीकात्मक नाटक — रमेश गौतम
7. युगबोध और हिंदी नाटक — डॉ. सरिता वशिष्ठ
8. नव्य हिंदी नाटक — डॉ. सावित्री स्वरूप
9. उत्तरशती का हिंदी साहित्य : संपा. डॉ. सुरेशकुमार जैन
10. तुका म्हणे, भाग 1 और 2 (मराठी)— डॉ. दिलीप धोंडगे

द्वितीय सत्र
प्रश्नपत्र 7 : विशेष स्तर
पाश्चात्य साहित्यशास्त्र

(इस प्रश्नपत्र के लिए कुल श्रेयांक/कर्मांक/क्रेडिट = 04)

उद्देश्य :

1. छात्रों को पाश्चात्य साहित्यशास्त्र का परिचय देना ।
2. छात्रों को पाश्चात्य साहित्यशास्त्र के विकासक्रम का परिचय देना ।
3. छात्रों को पाश्चात्य साहित्यशास्त्र के सिद्धांतों का ज्ञान कराना ।
4. छात्रों को साहित्यशास्त्रीय समीक्षा का महत्व अवगत कराना ।
5. छात्रों को पाश्चात्य साहित्यशास्त्र के सिद्धांतों में साम्य-वैषम्य एवं उसके कारणों का ज्ञान करना ।
6. छात्रों को नई समीक्षा के सिद्धांतों का ज्ञान कराना ।
7. छात्रों को आलोचना की प्रणालियों तथा नई अवधारणाओं का परिचय देना ।
8. साहित्यशास्त्रीय अध्ययन के द्वारा छात्रों में समीक्षात्मक दृष्टि विकसित करना ।

अध्यापन पद्धति :

1. व्याख्यान तथा विश्लेषण ।
2. संगोष्ठी, स्वाध्याय तथा गुटचर्चा ।
3. दृक-श्राव्य माध्यमों/साधनों का प्रयोग ।
4. पी. पी. टी./भाषा प्रयोगशाला का प्रयोग कराना ।
5. अतिथि विशेषज्ञों के व्याख्यान ।

अध्ययनार्थ विषय :

1. प्लेटो :
काव्य सिद्धांत, अनुकरण सिद्धांत
2. अरस्तू के काव्य सिद्धांत :
क) अनुकरण सिद्धांत : अनुकरण सिद्धांत की व्याख्या,
प्लेटो और अरस्तू के अनुकरण विषयक विचारों की तुलना।
ख) विरेचन सिद्धांत : स्वरूप विवेचन, विरेचन का महत्व,
त्रासदी विवेचन ।
3. उदात्त सिद्धांत :
उदात्त की व्याख्या, उदात्त के अंतरंग तथा बहिरंग तत्व,
काव्य में उदात्त का महत्व, लोंजाइनस का योगदान ।
4. आई. ए. रिचर्ड्स का मनोवैज्ञानिक मूल्यवाद और
संप्रेषण सिद्धांत : काव्य मूल्यों की मनोवैज्ञानिक व्याख्या,
संप्रेषण सिद्धांत की परिभाषा और स्वरूप, संप्रेषण सिद्धांत
का महत्व, आई. ए. रिचर्ड्स का योगदान ।
5. इलियट का निर्वैयक्तिकता सिद्धांत और वस्तुनिष्ठ
प्रतिरूपता सिद्धांत : इलियट की निर्वैयक्तिकता संबंधी
अवधारणा, वस्तुनिष्ठ प्रतिरूपता सिद्धांत, इलियट का योगदान ।
6. विविध वाद सामान्य परिचय :
क) प्रतीकवाद, बिंबवाद, अभिव्यंजनावाद, अस्तित्ववाद,
यथार्थवाद, संरचनावाद, विखंडनवाद, उत्तरआधुनिकता –
(केवल स्वरूप विवेचन तथा महत्व)

(तासिकाएँ 15 घंटे =
श्रेयांक/कर्मांक
क्रेडिट- 01)

(तासिकाएँ 05 घंटे

+

तासिकाएँ 10 घंटे
= 15 घंटे
श्रेयांक/कर्मांक
क्रेडिट- 01)

(तासिकाएँ 15 घंटे
= श्रेयांक/
कर्मांक/क्रेडिट-01)

(तासिकाएँ 15 घंटे =
श्रेयांक/कर्मांक/
क्रेडिट- 01)

संदर्भ ग्रंथ :

1. अरस्तू का काव्यशास्त्र – डॉ. नगेंद्र
 2. समीक्षालोक – डॉ. भगीरथ मिश्र
 3. पाश्चात्य काव्यशास्त्र के सिद्धांत – डॉ. कृष्णदेव शर्मा
 4. पाश्चात्य काव्यशास्त्र – डॉ. देवेन्द्रनाथ शर्मा
 5. पाश्चात्य काव्यशास्त्र के सिद्धांत – डॉ. शांतिस्वरूप गुप्त
 6. पाश्चात्य काव्यशास्त्र : अधुनातन संदर्भ – डॉ. सत्यदेव मिश्र
 7. पाश्चात्य साहित्य सिद्धांत: एक विश्लेषण – डॉ. ओमप्रकाश शर्मा
 8. आलोचना के आधुनिकतावाद और नई समीक्षा – डॉ. शिवकरण सिंह
 9. उत्तर आधुनिकता और उत्तर संरचनावाद – सुधीश पचौरी
 10. उत्तर आधुनिक साहित्यिक विमर्श – सुधीश पचौरी
 11. उत्तर आधुनिकता : कुछ विचार – संपा. देवीशंकर नवीन, सुशांतकुमार मिश्र
 12. भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र का तुलनात्मक अध्ययन – डॉ. बच्चनसिंह
 13. पाश्चात्य साहित्यालोचन और हिंदी पर उसका प्रभाव – डॉ. रवींद्रसहाय वर्मा
 14. हिंदी आलोचना : उद्भव और विकास – डॉ. भगवत्स्वरूप मिश्र
 15. आधुनिक समीक्षा – डॉ. भगवत्स्वरूप मिश्र
 16. तुलनात्मक साहित्यशास्त्र – डॉ. विष्णुदत्त राकेश
 17. हिंदी आलोचना के नए वैचारिक सरोकार – डॉ. कृष्णदत्त पालीवाल
 18. पाश्चात्य काव्यशास्त्र के सिद्धांत – डॉ. मैथिलीप्रसाद भारद्वाज
 19. पाश्चात्य काव्यशास्त्र के सिद्धांत – डॉ. भगवत्स्वरूप मिश्र
 20. साहित्य : विविध वाद – डॉ. ओमप्रकाश शर्मा
-

द्वितीय सत्र

प्रश्नपत्र 8 : विशेष स्तर :

विशेष विधा : हिंदी उपन्यास

(इस प्रश्नपत्र के लिए कुल श्रेयांक/कर्मांक/क्रेडिट= 04)

उद्देश्य :

1. छात्रों को उपन्यास विधा का तात्त्विक परिचय देना।
2. हिंदी विधा के विकास की जानकारी देना।
3. हिंदी उपन्यास की विभिन्न प्रवृत्तियों से छात्रों को अवगत कराना।
4. हिंदी उपन्यासों में अभिव्यक्त मानवी जीवन का परिचय देना।
5. हिंदी उपन्यासों में अभिव्यक्त जीवन विषयक दृष्टिकोण का मूल्यांकन कराना।
6. उपन्यास विधा का अन्य विधाओं के साथ तुलनात्मक परिचय देना।
7. छात्रों में उपन्यास साहित्य का आस्वादन, अध्ययन एवं मूल्यांकन की क्षमता बढ़ाना।
8. उपन्यास विधा की ओर सर्जक, समीक्षा, अनुवाद एवं शोध की दृष्टि से छात्रों को प्रेरित करना, आदि।

अध्यापन पद्धति :

1. व्याख्यान तथा विश्लेषण।
2. संगोष्ठी, स्वाध्याय तथा गुटचर्चा।
3. दृढ़-श्राव्य साधनों/ माध्यमों का प्रयोग।
4. पी. पी. टी./भाषा प्रयोगशाला का प्रयोग।
5. विशेषज्ञों के व्याख्यान।
6. अध्ययन यात्रा का आयोजन करना।

विशेष अध्ययन के लिए उपन्यास :

1. गोदान—प्रेमचंद

प्रकाशक — राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., 1 बी,
नेताजी सुभाष मार्ग दरियागंज, नई दिल्ली.

3. अलग अलग वैतरणी — शिवप्रसाद सिंह

प्रकाशक — लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद

4. परिशिष्ट—गिरिराज किशोर

प्रकाशक—राजकमल प्रका. प्रा. लि., 1 बी,
नेताजी सुभाष मार्ग दरियागंज, नई दिल्ली.

(तासिकाएँ 10 घंटे

+

तासिकाएँ 10 घंटे

+

तासिकाएँ 10 घंटे = 30 घंटे

श्रेयांक / कर्मांक / क्रेडिट— 02)

अध्ययनार्थ विषय :

1. उपन्यास की परिभाषा, स्वरूप तथा उपन्यास के तत्व।

2. हिंदी उपन्यास का विकासक्रम—प्रेमचंद पूर्व उपन्यास,
प्रेमचंदयुगीन उपन्यास, प्रेमचंदोत्तर उपन्यास।

3. हिंदी उपन्यासों की प्रवृत्तियाँ—सामाजिक, तिलस्मी,
जासूसी, राजनीतिक, आँचलिक, ऐतिहासिक, मनोवैज्ञानिक,
जीवनीपरक उपन्यास आदि का अध्ययन।

4. उपन्यासों में भाव पक्ष तथा कला पक्ष का महत्व।

5. उपन्यास की विविध शैलियों का अध्ययन—वर्णनात्मक, डायरी,
आत्मकथात्मक, पूर्वदीप्ति, चेतनाप्रवाही, संवादात्मक, पत्रात्मक, आदि।

6. गोदान, अलग—अलग वैतरणी, परिशिष्ट उपन्यासों का
भाव पक्ष तथा कला पक्ष।

7. गोदान, अलग—अलग वैतरणी और परिशिष्ट उपन्यास के
प्रमुख पात्रों का चरित्र—चित्रण।

8. गोदान, अलग—अलग वैतरणी और परिशिष्ट उपन्यासों का
विशेष अध्ययन।

(तासिकाएँ 15 घंटे =

श्रेयांक / कर्मांक / क्रेडिट
— 01)

(तासिकाएँ 15 घंटे

=

श्रेयांक / कर्मांक /
क्रेडिट — 01)

संदर्भ ग्रंथ :

1. हिंदी का गद्य साहित्य — डॉ. रामचंद्र तिवारी
 2. उपन्यास स्थिति और गति — डॉ. चंद्रकांत बांदिवडेकर
 3. उपन्यास का काव्यशास्त्र — डॉ. बच्चन सिंह
 4. उपन्यास : स्वरूप और संवेदना — राजेंद्र यादव
 5. भगवतीचरण वर्मा के उपन्यासों में चित्रित समाज जीवन — डॉ. विनय चौधरी
 6. शिवप्रसाद सिंह का उपन्यास साहित्य — डॉ. राजेन्द्र खैरनार
 7. महाकाव्यात्मक उपन्यासों की शिल्पविधि — डॉ. शंकर मुदगल
 8. आधुनिक परिप्रेक्ष्य में हिंदी साहित्य — डॉ. राजेंद्र खैरनार
 9. श्रीलाल शुक्ल के उपन्यासों का शिल्प विधान — डॉ. पी. व्ही. कोटमे
 10. गिरिराज किशोर का उपन्यास साहित्य एक अनुशीलन — डॉ. सुरेश साळुंके
 11. हिंदी साहित्य नए क्षितिज — डॉ. शशिभूषण सिंहल
 12. हिंदी उपन्यास समकालीन विमर्श — डॉ. सत्यदेव त्रिपाठी
 13. समकालीन हिंदी उपन्यास : वर्ग एवं वर्ण संघर्ष—डॉ. जालिंदर इंगले
 14. प्रेमचंदोत्तर हिंदी उपन्यास : नए मूल्य — शशिगुप्ता
 15. प्रेमचंद का सौंदर्यशास्त्र — संपा. नंदकिशोर नवल
 16. अंबेडकरवादी चिंतन और दलित उपन्यास : डॉ. प्रदीप सरवदे
 17. प्रेमचंद के उपन्यास : कथासंरचना — डॉ. मीनाक्षी श्रीवास्तव
 18. शिवप्रसाद सिंह के कथा साहित्य का समाजशास्त्रीय अध्ययन — डॉ. टी. मीनाकुमारी
 19. हिंदी के आँचलिक उपन्यासों में दलित जीवन —डॉ. भरतसगरे
 20. हिंदी उपन्यास सृजन और सिद्धांत — नरेंद्र कोहली
 21. हिंदी उपन्यासों की दिशाएँ — डॉ. वेदप्रकाश अमिताभ
 22. गोदान : संवेदना और शिल्प — डॉ. चंद्रशेखर कर्ण
 23. हिंदी के श्रेष्ठ उपन्यास और उपन्यासकार — डॉ. द्वारिकाप्रसाद सक्सेना
 24. हिंदी उपन्यास : वर्ग एवं वर्ण संघर्ष — डॉ. राजेंद्र खैरनार
-